स्नेह का रिटर्न है – स्व-ं को टर्न (परिवर्तन) करना

14-4-94

शुभ संकल्पों का महत्व बताने वाले, स्नेह वा शक्ति मूर्त बापदादा अपने स्नेही बच्चों की सभा को देखते हुए बोले–

आज स्नेह और शक्ति मूर्त बापदादा अपने चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। जितनी सभा साकार में है, उससे भी ज्-ाादा आकारी रूप की सभा है। सर्व साकार रूपधारी वा आकार रूपधारी बच्चों को बापदादा स्नेह की भुजाओं में समा-ो हुए हैं। स्नेह की भुजा-ों कितनी बड़ी हैं! चारों ओर के सभी बच्चे स्नेह की भुजाओं में ऐसे समा जाते हैं, जैसे नदी सागर में समा जाती है। स्नेह की भुजा-ों, स्नेह का सागर बेहद है। सभी बच्चे, चाहे नम्बरवार भी हैं लेकिन स्नेह में सब बन्धे हुए हैं। सर्व बच्चों में बापदादा का स्नेह समा-ाा हुआ है। स्नेह की शक्ति से ही सभी आगे उड़ते जा रहे हैं। स्नेह की उड़ान सर्व बच्चों को तन से वा मन से, दिल से बाप के समीप लाती है। स्नेह का विमान सेकण्ड की गति से बाप के समीप लाता है। ज्ञान, -ोग, धारणा उसमें -ाथाशक्ति नम्बरवार हैं लेकिन स्नेह में हर एक अपने को नम्बर वन अनुभव करते हैं। स्नेह सर्व बच्चों को ब्राह्मण जीवन प्रदान करने का मूल आधार है। अगर सभी बच्चों से पूछें कि निरन्तर -ोगी हो? निरन्तर ज्ञान स्वरूप हो? ज्ञानी नहीं लेकिन ज्ञान स्वरूप हो? तो सोचेंगे, कहेंगे 'हैं तो.....' निरन्तर धारणा स्वरूप हो, तो क-ाा कहेंगे? लक्ष-ा तो है ही। लेकिन जब पूछेंगे कि निरन्तर स्नेही हो तो कहेंगे 'हाँ जी'। स्नेह में सभी पास हैं। कोई पास विद् ऑनर हैं, कोई पास हैं। पास हैं ना? डबल विदेशी, भारत वाले सब पास हैं? पास नहीं होते तो पास नहीं आते। पास आना सिद्ध करता है कि पास हैं। स्नेह का अर्थ ही है पास रहना और पास होना और हर परिस्थिति को बहुत सहज पास करना। तो सभी तीनों में पास हो ना? पास करना भी सहज है ना कि पास करने में कभी मुश्किल, कभी सहज है? पास रहने में तो आनन्द ही आनन्द है और पास करना इसमें नम्बरवार हैं -ाा सब नम्बर वन हैं? देखो, नम्बर वन नहीं कहते हैं, सभी चुप हो ग-ो माना समथिंग है। लेकिन सम-ा प्रति सम-ा स्नेह की शक्ति से पास करना भी इतना ही सहज हो रहा है और होना ही है जैसे पास रहना सहज है और जब पास करना सदा सहज हो जा-ोगा तो पास

होना क-ा, पास हुए ही पड़े हैं। -ह तो पक्का निश्च-ा है कि पास हुए ही पड़े हैं। सिर्फ रिपीट करना है। इतना अटल निश्च-ा है ना? दूर बैठे भी सब नज़दीक हो ना! दिलतख्त पर हैं। कोई न-ानों के नूर हैं, कोई दिल तख्तनशीन हैं। सबसे नज़दीक न-ान हैं और दिल है। आप सभी ओम शान्ति भवन में नहीं बैठे हो लेकिन बापदादा के दिल तख्त पर -ा न-ानों में नूरे रत्न बन समा-े हुए हो। समा-ा हुआ कभी दूर नहीं होता।

इस वर्ष क-ा करेंगे? कहने में तो कहते हो कि इस वर्ष के मिलन की अन्तिम बारी है। लेकिन अन्त, आदि की -ाद ज-ादा दिलाता है। आदि, मध-ा की -ाद दिलाता है लेकिन अन्त आदि की -ाद दिलाता। तो अन्त नहीं, लेकिन आदि है। तीव्र गति के उड़ान की आदि है। जो अनादि रफ्तार है, अनादि स्वरूप है आत्म स्वरूप, तो अनादि स्वरूप की रफ्तार क-ा है? कितनी तेज़ रफ्तार है! आजकल के भिन्न-भिन्न साइन्स के साधनों के तीव्र गति से भी तीव्र गति। साइन्स के साधनों की रफ्तार फिर भी साइन्स, साइन्स द्वारा रफ्तार को कट भी कर सकती, पकड़ सकती है लेकिन आत्मा की गति को कोई अभी तक न पकड़ सका है, न पकड़ सकता है। इसमें ही साइन्स अपने को फ़ेल समझती है। और जहाँ साइन्स फ़ेल है वहाँ साइलेन्स की शक्ति से जो चाहो वो कर सकते हो। तो आत्म शक्ति की उड़ान की तीव्र गति की आदि करो। चाहे स्व परिवर्तन में, चाहे किसी की भी वृत्ति परिवर्तन में, चाहे वा-ुमण्डल परिवर्तन में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क के परिवर्तन में अभी तीव्र गति लाओ। तीव्रता की निशानी है सोचा और हुआ। ऐसे नहीं, सोचा तो है.. हो जा-ेगा..। नहीं, सोचा और हुआ, संकल्प, बोल और कर्म तीनों श्रेष्ठ साथ-साथ हों। ब-ार्थ को वा उल्टे संकल्प को चेक करो तो उसकी गति बहुत फ़ास्ट होती है। अभी-अभी संकल्प आ-ा, अभी-अभी बोल लि-ा, अभी-अभी कर भी लि-ा। संकल्प, बोल, कर्म इकट्ठा-इकट्ठा बहुत फ़ास्ट होता है। उसकी गति का जोश इतना तीव्र होता है जो श्रेष्ठ संकल्प, कर्म, म-ार्दा, ब्राह्मण जीवन की महानता का होश समाप्त हो जाता है। ब-ार्थ का जोश–सत-ाता का होश, -ाथार्थता का होश समाप्त कर देता है और कुछ सम-ा के बाद जब होश आता तब सोचते हैं करना नहीं चाहि-े था, -ाथार्थ नहीं है लेकिन उस सम-ा जब जोश होता है तो -ाथार्थ की पहचान बदल कर अ-ाथार्थ को -ाथार्थ अनुभव करते हैं। तो ब-ार्थ का

जोश, होश को ख़त्म कर देता है। **तो इस वर्ष सभी बच्चे विशेष व्-ार्थ से इनोसेन्ट बनो।** जैसे जब आप आत्मा-ों अपने सत-ुगी राज-ा में थीं तो व्-ार्थ वा मा-ा से इनोसेन्ट थीं इसलि-ो देवताओं को महान् आत्मा-ों, सेन्ट कहते हैं, ऐसे अपने वो संस्कार इमर्ज करो, व्-ार्थ की अविद्या स्वरूप बनो। सम-ा, श्वास, बोल, कर्म, सर्व में व्-ार्थ की अविद्या अर्थात् इनोसेन्ट। जब व्-ार्थ की अविद्या हो गई तो दिव्-ाता स्वत: ही सहज ही अनुभव होगी और अनुभव करा-ोगी। अभी तक -ाह नहीं सोचो कि पुरुषार्थ तो कर ही रहे हैं...। पुरुष इस रथ पर कर रहा है तो पुरुष बन रथ द्वारा कराना–इसको कहा जाता है पुरुषार्थ। पुरुषार्थ चल रहा है, नहीं, लेकिन पुरुषार्थी सदा उड़ रहा है। -ाथार्थ पुरुषार्थी इसको कहा जाता है। पुरुषार्थ का अर्थ -ाह नहीं है कि एक बारी की ग़लती बार-बार करते रहो और पुरुषार्थ को अपना सहारा बनाओ। -ाथार्थ पुरुषार्थी हो, स्वभाव भी स्वाभाविक हो, अति सहज। अभी मेहनत को किनारे करो। अल्पकाल के आधारों का सहारा, जिसको किनारा बनाकर रखा है, -ो अल्पकाल के सहारे के किनारे अभी छोड़ दो। जब तक -ो किनारे हैं तो सदा बाप का सहारा अनुभव नहीं हो सकता और बाप का सहारा नहीं है इसलि-ो हद के किनारों को सहारा बनाते हैं। चाहे अपने स्वभाव-संस्कारों को, चाहे परिस्थिति-ों को, जो किनारे बना-ो हैं -ो सब अल्पकाल के दिखावा-मात्र धोखे वाले हैं। धोखे में नहीं रह जाओ। बाप का सहारा छत्रछा-ाा है। अल्पकाल की बातें धोखेबाज़ हैं। मा-ाा की बहुत मीठी-मीठी बातें सुनते रहते हैं, बहुत सुन चुके हैं। जैसे द्वापर के शास्त्र बनाने वाले बातें बनाने में बहुत होशि-ाार हैं, कितनी मीठी-मीठी बातें बना दी हैं। तो बातें नहीं बनाओ, बातें बनाने में सब एक-दो से होशि-ाार हैं। न बातें बनाओ, न बातें देखो, न बातें करो। लेकिन क-ाा करो? बाप को देखो, बाप समान करो, बाप समान बनो। जब कोई बात सामने आती तो बात बनाना सेकण्ड में आ जाता है। क-ोंकि मा-ाा की गति भी तीव्र है ना। ऐसे सुन्दर रूप की बात बना देती है जो सुनते बाप को तो हंसी आती है लेकिन दूसरे प्रभावित हो जाते हैं–बोलते तो ठीक हैं, बहुत अच्छा है, बात तो ठीक है और स्व-ं को भी ठीक लगते हो। लेकिन सम-ा की तीव्र गति को देख अब इन किनारों से तीव्र उड़ान करो। -ो अनेक प्रकार की बातें व्-ार्थ रजिस्टर के रोल बनाती रहती हैं। रोल के ऊपर रोल बनता जाता है। इसलि-ो इससे इनोसेन्ट बनो। इस इनोसेन्ट

स्टेज से बनी-बनाई सेवा की स्टेज आपके सामने आ-ोगी। इस वर्ष के -थार्थ पुरुषार्थ के प्रत-ाक्षफल की निशानी बनी-बनाई सेवा आपके सामने आ-ोगी। ब-ार्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आ-ोगी। आप सभी सेवा के निमित्त तो अनेक वर्ष बने, अब औरों को निमित्त बनाने की सेवा के निमित्त बनो। माइक वो हो और माइट आप हो। बहुत सम-ा आप माइक बने, अब माइक औरों को बनाओ, आप माइट बनो। आपके माइट से माइक निमित्त बनें। इसको कहा जाता है तीव्र गति के उड़ान की निशानी। समझा क-ाा करना है? तीव्र उड़ान है ना। कि कभी तीव्र, कभी स्लो? सदा तीव्र गति के उड़ान से उड़ते रहेंगे। बादलों को देख घबराओ नहीं। -ो बातें ही बादल हैं। सेकण्ड में क्रॉस करो। विधि को जानो और सेकण्ड में विधि द्वारा सिद्धि को प्राप्त करो। एक तरफ है रिद्धि-सिद्धि का फ़ोर्स और आपका है विधि सम्पन्न सिद्धि का फ़ोर्स। रिद्धि-सिद्धि है अल्पकाल और विधि-सिद्धि सदाकाल के लि-ो।

बापदादा अभी ऐसा ग्रुप चाहता है जो सदा मन्सा में, वाणी में, बोल में, सम्पर्क में जो ओटे सो अर्जुन। मैं अर्जुन हूँ। मैं जो करुँगा, ('मैं' बॉडी कॉन्सेस का नहीं, मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ) मुझे देख और करेंगे। तो जो ओटे सो अर्जुन। जो गा-ाा हुआ है, अव्वल नम्बर अर्थात् अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप बापदादा देखना चाहते हैं। बातों को नहीं देखें, दूसरों को नहीं देखें, दूसरे का ब-ार्थ नहीं सुनें। बस, अलौकिक जन। संकल्प, बोल और कर्म सबमें अलौकिक, दिव-ाता की झलक हो। इसको कहा जाता है अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप इस वर्ष में तै-ाार होगा कि दूसरे वर्ष में तै-ाार होगा? जो इस ग्रुप में आना चाहते हैं वह हाथ उठाओ। मुझे बनना है, मैं अर्जुन हूँ। फिर कोई ऐसा समाचार नहीं आवे–क-ाा करें.. हो जाता है.. सरकमस्टांस ऐसे हैं.. मदद नहीं मिलती है.. दुआ-ों नहीं मिलती हैं.. सहारा नहीं मिलता.. जिन्हों को कुछ सम-ा चाहि-ो वो हाथ उठाओ। एक-दो मास चाहि-ो वा एक वर्ष चाहि-ो। जो भी ग्रुप आवे उनसे पूछना फिर रिज़ल्ट सुनाना। टीचर्स तो पहले। क-ोंकि जो निमित्त बनते हैं उनका सूक्ष्म वा-ुमण्डल, वा-ाब्रेशन्स ज़रूर जाता है। पद्मगुणा पुण-ा भी मिलता है और पद्म गुणा निमित्त भी बनते हैं। और शब्द तो नहीं बोलेंगे ना। टीचर बनना बहुत अच्छा है, गद्दी तो मिल जाती है ना! दीदी-दीदी का टाइटल मिल जाता है ना। लेकिन ज़िम्मेदारी भी फिर इतनी है। इस

वर्ष में कुछ नवीनता दिखाओ। -ाह नहीं सोचो–हाथ तो अनेक बार उठा चुके हैं, प्रतिज्ञा भी बहुत वर्ष कर चुके हैं, ऐसे संकल्प न सूक्ष्म में आ-ो, न औरों के प्रति आ-ो। -ो संकल्प भी ढीला करता है। -ो तो चलता ही आता है, -ो तो होता ही रहता है... -ो वा-ाब्रेशन भी कमज़ोर बनाता है। दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफ़लता को अवश-ा लाती है। कमज़ोर संकल्प नहीं उत्पन्न करो। उनको पालने में बहुत टाइम व्-ार्थ जाता है। उत्पत्ति बहुत जल्दी होती है। एक सेकण्ड में सौ पैदा हो जाते हैं। और पालना करने में कितना सम-ा लगता है! मिटाने में मेहनत भी लगती, सम-ा भी लगता और बापदादा के वरदान व दुआओं से भी वंचित रह जाते। सर्व की शुभ भावनाओं की दुआओं से भी वंचित हो जाते हैं। शुद्ध संकल्प का बंधन, घेराव, ऐसा बांधो सबके लि-ो, चाहे कोई थोड़ा कमज़ोर भी हो, उनके लि-ो भी -ो शुद्ध संकल्पों का घेराव एक छत्रछा-ाा बन जा-ो, सेफ्टी का साधन बन जा-ो, किला बन जा-ो। शुद्ध संकल्प की शक्ति को अभी कम पहचाना है। एक शुद्ध वा श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प क-ाा कमाल कर सकता है–इसकी अनुभूति इस वर्ष में करके देखो। पहले अभ्-ाास में -ाुद्ध होगी, व्-ार्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट करेगा। जैसे कौरव-पाण्डव के तीर दिखाते हैं ना, तीर, तीर को रास्ते में ही ख़त्म कर देता है तो संकल्प, संकल्प को ख़त्म करने की कोशिश करता है, करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विज-ा का तिलक सदा है ही है। अब इसको इमर्ज करो तो व्-ार्थ स्वत: ही मर्ज हो जा-ोगा। व्-ार्थ को सम-ा देते हो। कट नहीं करते हो लेकिन उसके रंग में रंग जाते हो। सेकण्ड से भी कम सम-ा में कट करो। शुद्ध संकल्प से समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वा-ाुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखा-ोगा। पहले से ही -ाह नहीं सोचो कि होता तो है नहीं, करते तो बहुत हैं, सुनते तो बहुत हैं, अच्छा भी बहुत लगता है, लेकिन होता नहीं है। -ाह भी व्-ार्थ वा-ाुमण्डल कमज़ोर बनाता हैं। होना ही है–दृढ़ता रखो, उड़ान करो। क-ाा नहीं कर सकते हो! लेकिन पहले स्व के ऊपर अटेन्शन। स्व का अटेन्शन ही टेन्शन ख़त्म करेगा। समझा क-ाा करना है? कोई कहे -ाह तो होता ही रहता है, पहले भी प्रतिज्ञा की थी--ाह नहीं सुनो। इसमें कमज़ोरों को साथ नहीं देना, साथी बनाना। अगर कोई ऐसा-वैसा बोलता है तो एक-दो में कहते हैं ना शुभ बोलो, शुभ सोचो, शुभ करो। अच्छा।

सभी खुश राज़ी हैं ना, सभी से बात की ना? -ाह भी बाप का स्नेह है। स्नेह की निशानी है वो स्नेही की कमी नहीं देख सकता। स्नेही की ग़लती अपनी ग़लती समझेगा। बाप भी जब बच्चों की कोई बात सुनते हैं तो समझते हैं मेरी बात है। तो स्नेही, सम्पन्न, सम्पूर्ण, समान देखना चाहते हैं। सभी स्नेह में एक शब्द बापदादा के आगे चाहे दिल से, चाहे गीत से, चाहे बोल से, चाहे संकल्प से ज़रूर कहते हैं, बापदादा तो सबका सुनता है ना। सभी एक बात बहुत बार कहते हैं कि बाबा के स्नेह का रिटर्न क-ाा दें? क-ोंकि क-ाा से क-ाा तो बन ग-ो हो ना। कोटों में कोई तो बन ग-ो हो ना, कोई में कोई नहीं बने हो। तो कोटों में कोई तो बने हो ना। इसमें सब पास हो। बाप रिटर्न क-ाा चाहते हैं? **रिटर्न करना है अपने को टर्न करना।** समझा? बस, -ाही रिटर्न है। -ाह तो कर सकते हो ना? स्नेह के पीछे -ाह नहीं कर सकते हो! मतलब का स्नेह तो नहीं है ना! स्नेह में त-ाग करने के लि-ो तै-ाार हो? बाप जो भी आज्ञा करे तै-ाार हो? स्नेह में सब सेन्ट-परसेन्ट हो -ाा परसेन्टेज है? अपने को टर्न करने के लि-ो तै-ाार हो? स्नेह के पीछे -ाह त-ाग है -ाा भाग-ा है? भक्त तो सिर उतार कर रखने के लि-ो तै-ाार हैं, आप रावण का सिर उतार कर रखने के लि-ो तै-ाार हो? शरीर का सिर नहीं उतारो लेकिन रावण का सिर तो उतारो! पांचों ही सिर उतारेंगे -ाा एक-दो रखेंगे? थोड़ा कमज़ोरी का सिर रखेंगे? चलो पांच नहीं, छठा दिखाते हैं ना बेसमझी का, वो रखेंगे? अच्छा। अभी एक-एक ज़ोन हाथ उठाओ।

दिल्ली – दिल्ली वाले क-ाा कमाल करेंगे, रिटर्न का टर्न करेंगे? त-ाग का भाग-ा लेने में कितना नम्बर आ-ोगा? फ़र्स्ट! सभी फ़र्स्ट नम्बर लेंगे, फ़ास्ट जा-ोंगे परिवर्तन करने में? दिल्ली का किला मज़बूत है ना।

महाराष्ट्र ज़ोन – महाराष्ट्र कौन-सा नम्बर लेंगे? फ़र्स्ट! और फ़र्स्ट से आगे क-ाा है? ए वन कौन होगा? महाराष्ट्र ए वन होगा -ाा वन होगा? ए वन को आगे जाना पड़ेगा। वैसे दिल्ली वाले भी ए वन कह सकते हैं लेकिन ए वन हैं -ाा वन हैं? वन माना विन, ए वन माना डबल विन। महाराष्ट्र वाले वन से भी आगे ए वन बनना।

कर्नाटक – अब कर्नाटक क-ाा करेगा? सदा ए वन का नाटक दिखा-ोगा और

नाटक नहीं दिखाना। वैसे कर्नाटक में नाटक बहुत होते हैं। अभी ए वन का नाटक दिखाना।

इस्टर्न– इस्टर्न ज़ोन क-ाा कमाल करेगा? चारों ओर ए वन का सू-र्ा उद-ा करेगा।

तामिलनाडु, केरला – तामिलनाडु में विशेष डांस का महत्व है। तो चारों ओर ए वन का खुशी का नाच दिखा-ोंगे। सब ए वन।

इन्दौर ज़ोन – इन्दौर वाले क-ाा करेंगे? इन-डोर का अर्थ है अन्तर्मुखता। तो इन्दौर वाले चारों ओर अन्तर्मुखता की शक्ति के वा-ाब्रेशन से चारों ओर ए वन के वा-ाब्रेशन्स फैला-ोंगे। मंज़ूर है?

-ू.पी. – -ू.पी. वाले क-ाा कमाल करेंगे? -ू.पी. की विशेषता है नदि-ों की महानता। सभी विशेष नदि-ाँ कहाँ हैं? -ू.पी. में हैं ना। तो ए वन बनने और बनाने की नदि-ां बहा-ोंगे। मंज़ूर है? नदी कहाँ से निकलेगी? कानपुर से -ाा इलाहाबाद से -ाा सबका मेल होगा? वो तीन नदि-ाँ मिलती हैं ना। -ू.पी. के सर्व सेन्टर की नदि-ाँ साथ-साथ संगम होकर निकलें। ठीक है ना!

गुजरात ज़ोन – गुजरात वाले मान न मान, मैं तेरा मेहमान हैं। होशि-ाार हैं ना, तो गुजरात वाले क-ाा कमाल करेंगे? मेहमान बनने में होशि-ाार हो ना तो कमज़ोरी -ाा व्-ार्थ की मेहमानी को जो मेहमान बनकर आती है, -ाह कमज़ोरी ओरीजनल तो है नहीं। तो ए वन बनना बनाना अर्थात् व्-ार्थ के मेहमान को समाप्त करना। तो गुजरात वाले अपनी शक्ति से, अपने शुभ ए वन श्रेष्ठ संकल्प से -ाह व्-ार्थ की रात गुज़र – गई -ाह शुभ समाचार सुना-ोंगे। गुजरात माना रात गुज़र गई। श्रेष्ठता का दिन लाने वाले। मंज़ूर है? मेहमान बनने में होशि-ाार, मेहमान को निकालने में भी होशि-ाार।

राजस्थान – राजस्थान क-ाा करेगा? समर्थता पर राज-ा करेगा। समझा? व्-ार्थ को खत्म कर समर्थता पर राज-ा करने वाले राजस्थान। तो ए वन तो हो ही ग-ो ना। ए वन मधुबन है ना राजस्थान में। तो ए वन में एड करो ऑल वन।

पंजाब, हरि-ााणा – पंजाब ने इस पुरानी दुनि-ाा में भी अभी क-ाा कमाल की

है? आतंकवाद को कमज़ोर कर दि-ाा। तो पंजाब क्-ाा कमाल करेगा? दो, तीन, चार, दस नम्बर को कमज़ोर करेगा। इस आतंकवाद को ख़त्म करके सदा नम्बरवन। अच्छा!

डबल विदेशी – विदेश क्-ाा करेगा? विदेश वाले कमज़ोरी को अपने विदेश में भेज दो। बिल्कुल दूर देश में भेज दो, जो वापस नहीं आवे। कमज़ोरी, व्-ार्थ को विदेश में भेज, देश को समर्थ बनाओ। भारत में -ाा देश में अपने समर्थी का झण्डा लहराओ। इसमें सदा ही एवररेडी, ए वन। समझा! कभी-कभी वाले रेडी नहीं। एवर रेडी, ए वन। समझा!

अभी दिल्ली वाले क्-ाा कमाल करेंगे? क्-ाोंकि दिल्ली सेवा का फाउन्डेशन है। दिल्ली से पहले गरीब निवाज़ की प्रथा आरम्भ हुई। दिल्ली ने सम-ा की आवश-ाकता में सह-ाोग दि-ाा। दिल्ली से पहला नम्बरवन पाण्डव (जगदीश) निकला। इन्वेन्शन भी दिल्ली काफ़ी नम्बरवन होकर निकालती है। अभी तो सब होशि-ाार हो ग-ो हैं लेकिन निमित्त तो दिल्ली बनी। तो अब ओटे सो अर्जुन में ए नम्बर। ठीक है ना। पाण्डव किला मज़बूत करने में ए वन। मंज़ूर है ना? अच्छा, सभी ज़ोन से मिले। मधुबन वाले जो नीचे बैठे हैं, त्-ााग कि-ाा है, उन्हों को बापदादा दिलतख्त की गिफ्ट सहित विशेष -ााद-प्-ाार और पद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं। सारी सीज़न मधुबन वालों ने सेवा की है तो निर्विघ्न, अथक सेवाधारि-ाों को, चाहे मधुबन निवासी, चाहे चारों ओर के मेहमाननिवाज़ी करने वाले सेवाधा-रि-ाों को बापदादा–सदा उन्नति को प्राप्त होते ही रहेंगे, होना ही है–-ाह प्रगति का तिलक दे रहे हैं। हॉस्पिटल वाले सभी डॉक्टर्स वा सेवाधारी जो भी हॉस्पिटल में हैं, वो सब हेल्दी और हैप्पी हैं? स्थूल हेल्थ नहीं, आत्मिक हेल्थ। तो सदा हेल्दी और सदा हैप्पी की मुबारक और आबू रोड वाले -ाा तलहटी वाले सभी को बहुत प्-ाार से रिसीव करते हैं और ठण्डे पानी का आराम देते हैं, गर्म चा-ा से उमंग दिलाते हैं और भटके हुए को राह भी दिखाते हैं इसलि-ो रिसीव करने वाले, स्वागत करने वाले और मेहमाननिवाज़ी करने वाले, सभी को बापदादा सेवा की मुबारक के साथ 'सदा प्रगति भव' का वरदान दे रहे हैं। आबू निवासी प्रवृत्ति वाले भी बहुत हैं। सदा प्रवृत्ति में रह श्रेष्ठ वा-ाब्रेशन्स फ़ैलाने की मुबारक। आबू

निवासी भी अभी मेहमाननिवाज़ी अच्छी करते हैं। स्थान देते हैं ना। खुश होते हैं ना सभी। तो सदा उड़ते रहो और उड़ाते रहो।

ज्ञान सरोवर तो है ही सरोवर। सरोवर में जाते ही परिवर्तन हो जाता है। तो ज्ञान सरोवर को बापदादा आत्माओं की वृत्ति और जीवन परिवर्तन करने का सरोवर कहते हैं। इसलि-े ज्ञान सरोवर में सेवा करने वाले सदा ही अथक भव और सदा वृद्धि को प्राप्त भव आत्मा-ें हैं। प्रगति की सफ़लता का वरदान ज्ञान सरोवर के स्थान और सेवाधारि-ों को सदा है ही। अच्छा!

चारों ओर के मन की उड़ान में उड़ने वाले मधुबन निवासी अव्-ाक्त रूपधारी आत्माओं को और साथ-साथ संकल्प के विमान द्वारा मधुबन में पहुँचने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को और चारों ओर के सर्वश्रेष्ठ स्नेही, स्नेह में त्-ाग के भाग्-ा का श्रेष्ठ संकल्प करने वाली आत्माओं को, सदा ए वन के संकल्प को प्रत्-ाक्ष जीवन में लाने वाले बाप के समीप आत्माओं को बापदादा का -ाद-प्-ार और हर एक भिन्न-भिन्न भारत के देश वा विदेश के हर एक बच्चे को नाम सहित विशेषता सम्पन्न -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

हर सम-ा की सीन न्-ारी और प्-ारी है। आप लोगों का बचपन का गीत कौन-सा है? 'न-ा दिन लागे, न-ी रात लागे.....' इस गीत पर नशे से डांस करते थे ना! तो नवीनता में मज़ा है ना। वही-वही सीन बदलनी तो है ही और जो बदलता है वो न-ा ही होता है। पुराना तो ख़त्म होता है, न-ा होता है। तो हर सम-ा की सीन, हर सम-ा की बातें न-े ते न-ी। तो न-ा अच्छा लगता है -ा पुराना? न-ा अच्छा है ना! (-ाद पुराना करते हैं) -ाद करते हैं लेकिन पसन्द तो न-ा करते हैं ना। तो न-ा ही होना है। अच्छा! सभी खुश हैं ना? तन से, मन से खुश ही खुश हैं।

१- अब आत्म-शक्ति के उड़ान के तीव्रगति की आदि करो तो जो सोचेंगे वही होगा।

२- सेंट (महान) बनने के लिए व्-ार्थ से इनोसेंट बनो।

३- व्-ार्थ की अविद्या होना ही दिव्-ाता की अनुभूति का आधार है।

४- सच्चा पुरुषार्थी वह है जो पुरुष बन रथ द्वारा का-र्ा करा-ो।

५- हद के किनारों का सहारा छोड़ एक बाप को अपना सहारा बनाओ।

६- अल्पकाल की बातें धोखेबाज़ हैं, बाप का सहारा ही छत्रछा-ाा है।

७- व्-ार्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आ-ोगी।

८- औरों को माइक बनाओ, आप माइट बनो।

९- तीव्रगति की उड़ान में अनेक प्रकार की बातें ही बादल हैं, उन्हें सेकण्ड में क्रास करो।

१०- शुद्ध संकल्पों का ऐसा घेराव डालो जो कमज़ोर आत्माओं के लिए सेफ्टी का साधन बन जाए।

११- शुद्ध वा श्रेष्ठ संकल्प इमर्ज करो तो व्-ार्थ स्वत: मर्ज हो जा-ोगा।